



Durvi vashishth

16 Oct 2014

01:41 PM

Indore

Model: Web-MyKundli

Order No: 120972301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 16/10/2014
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 13:41:41 घंटे
इष्ट _____: 18:15:29 घटी
स्थान _____: Indore
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 22:42:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:54:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:26:24 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 13:15:17 घंटे
वेलान्तर _____: 00:14:24 घंटे
साम्पातिक काल _____: 14:54:22 घंटे
सूर्योदय _____: 06:23:29 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:00:21 घंटे
दिनमान _____: 11:36:52 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 28:49:23 कन्या
लग्न के अंश _____: 08:42:35 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मकर - शनि
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: पुष्य - 1
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: सिद्ध
करण _____: कौलव
गण _____: देव
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: हू-हुस्नी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1936	आश्विन	24
पंजाबी	संवत : 2071	आश्विन	31
बंगाली	सन् : 1421	आश्विन	29
तमिल	संवत : 2071	पुरुटासी	30
केरल	कोल्लम : 1190	कन्नी	30
नेपाली	संवत : 2071	आश्विन	30
चैत्रादि	संवत : 2071	कार्तिक	कृष्ण 8
कार्तिकादि	संवत : 2071	आश्विन	कृष्ण 8

पंचांग

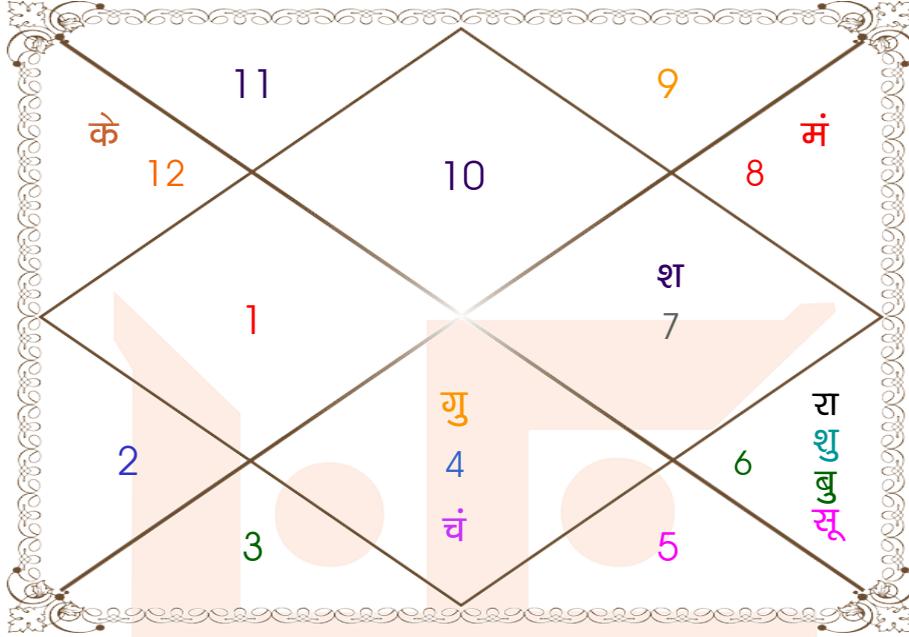
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 8
तिथि समाप्ति काल _____ : 13:45:34
जन्म तिथि _____ : 8
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुनर्वसु
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 10:46:15 घंटे
जन्म योग _____ : पुष्य
सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्ध
योग समाप्ति काल _____ : 25:32:21 घंटे
जन्म योग _____ : सिद्ध
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 13:45:34 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 07:18:35
भभोग _____ : 67:05:23
भोग्य दशा काल _____ : शनि 16 वर्ष 11 मा 1 दि

घात चक्र

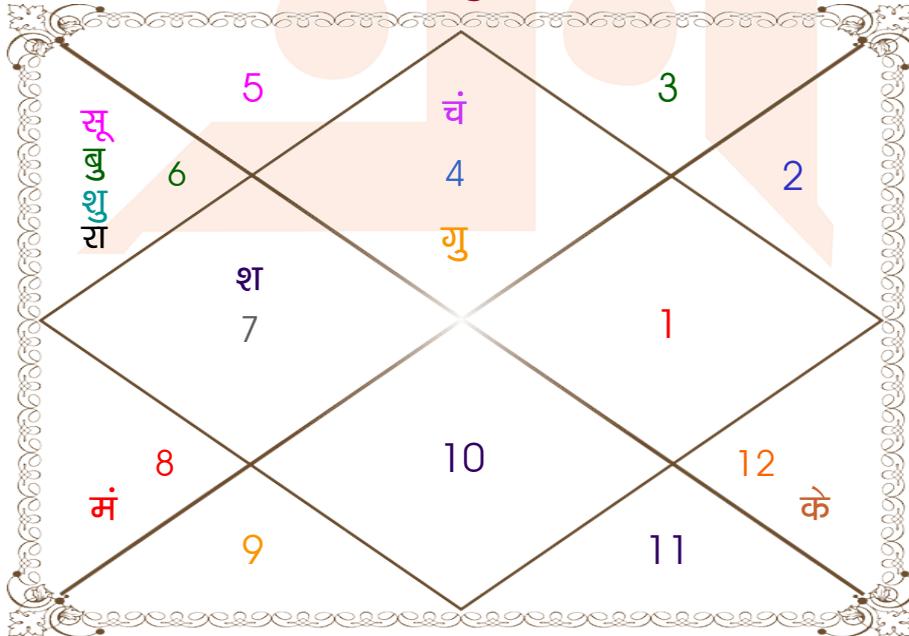
मास _____ : पौष
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : बुधवार
नक्षत्र _____ : अनुराधा
योग _____ : व्याघात
करण _____ : नाग
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : श्वान
लग्न _____ : तुला
सूर्य _____ : सिंह
चन्द्र _____ : मीन
मंगल _____ : कन्या
बुध _____ : मिथुन
गुरु _____ : तुला
शुक्र _____ : वृश्चिक
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

के			
			गु चं
ल			
	मं	श	रा भू सू

लग्न कुण्डली

		के
गु चं		ल
रा भू सू	श	मं

विंशोत्तरी
शनि 16वर्ष 11मा 1दि
शनि

16/10/2014

17/09/2132

शनि	17/09/2031
बुध	16/09/2048
केतु	17/09/2055
शुक्र	17/09/2075
सूर्य	16/09/2081
चन्द्र	17/09/2091
मंगल	17/09/2098
राहु	17/09/2116
गुरु	17/09/2132

योगिनी
धान्या 2वर्ष 8मा 1दि
भद्रिका

18/06/2021

18/06/2026

भद्रिका	26/02/2022
उल्का	28/12/2022
सिद्धा	18/12/2023
संकटा	27/01/2025
मंगला	19/03/2025
पिंगला	28/06/2025
धान्या	27/11/2025
भ्रामरी	18/06/2026

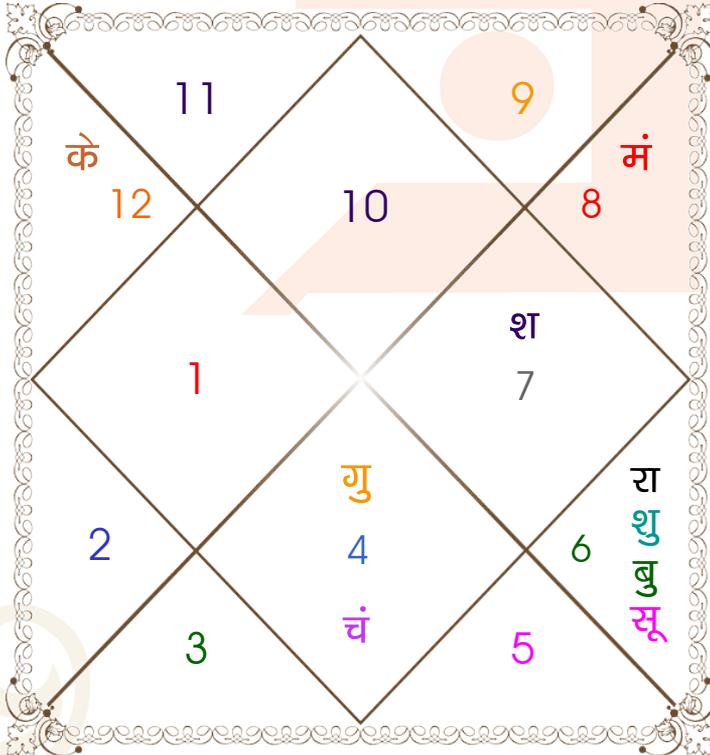
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	08:42:35	391:01:30	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
सूर्य			कन्या	28:49:23	00:59:30	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	सम राशि
चंद्र			कर्क	04:47:36	11:58:32	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	स्वराशि
मंगल			वृश्चि	28:32:43	00:43:27	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	स्वराशि
बुध	व	अ	कन्या	29:58:23	01:13:23	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	स्वराशि
गुरु			कर्क	24:19:12	00:08:47	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	उच्च राशि
शुक्र		अ	कन्या	26:30:33	01:15:05	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	गुरु	नीच राशि
शनि			तुला	28:02:18	00:06:32	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	उच्च राशि
राहु			कन्या	25:10:38	00:00:05	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	मूलत्रिकोण
केतु			मीन	25:10:38	00:00:05	रेवती	3	27	गुरु	बुध	राहु	मूलत्रिकोण
हर्ष	व		मीन	20:06:27	00:02:24	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	---
नेप	व		कुंभ	10:59:36	00:00:58	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	---
प्लूटो			धनु	17:04:13	00:00:43	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	---
दशम भाव			तुला	21:59:53	--	विशाखा	--	16	शुक्र	गुरु	शनि	--

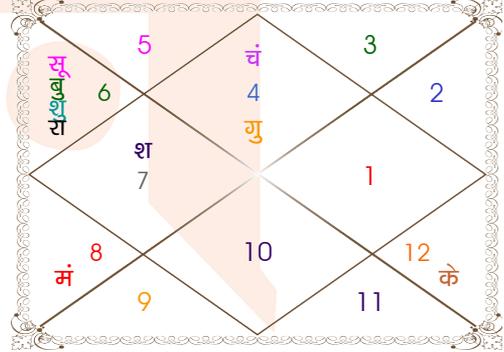
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:03:54

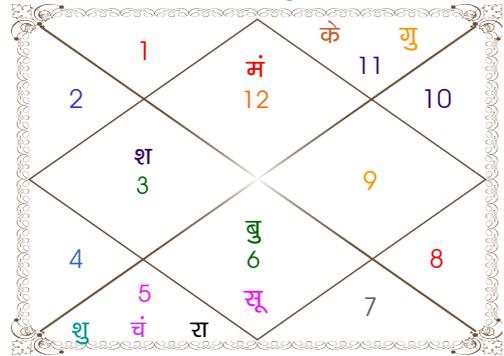
लग्न-चलित



चंद्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 25:55:28	मकर 08:42:35
2	मकर 25:55:28	कुम्भ 13:08:21
3	मीन 00:21:14	मीन 17:34:07
4	मेष 04:47:00	मेष 21:59:53
5	वृष 04:47:00	वृष 17:34:07
6	मिथुन 00:21:14	मिथुन 13:08:21
7	मिथुन 25:55:28	कर्क 08:42:35
8	कर्क 25:55:28	सिंह 13:08:21
9	कन्या 00:21:14	कन्या 17:34:07
10	तुला 04:47:00	तुला 21:59:53
11	वृश्चिक 04:47:00	वृश्चिक 17:34:07
12	धनु 00:21:14	धनु 13:08:21

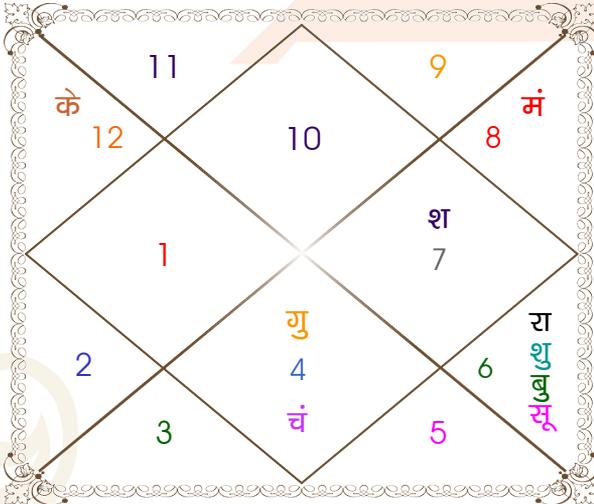
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	08:42:35
2	कुम्भ	15:46:27
3	मीन	21:38:10
4	मेष	21:59:53
5	वृष	17:45:59
6	मिथुन	12:03:58
7	कर्क	08:42:35
8	सिंह	15:46:27
9	कन्या	21:38:10
10	तुला	21:59:53
11	वृश्चिक	17:45:59
12	धनु	12:03:58

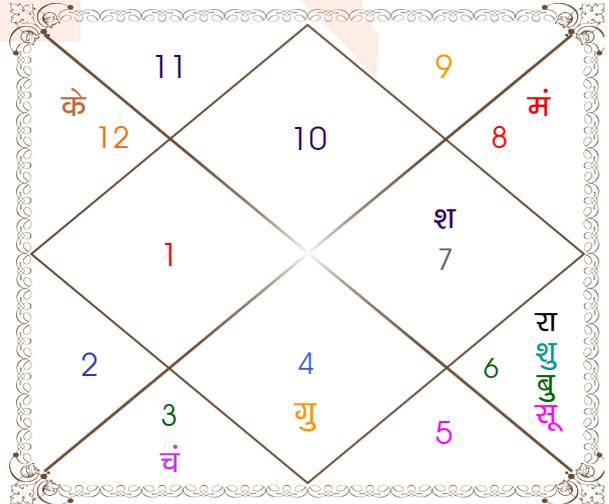
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 16 वर्ष 11 मास 1 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
16/10/2014	17/09/2031	16/09/2048	17/09/2055	17/09/2075
17/09/2031	16/09/2048	17/09/2055	17/09/2075	16/09/2081
शनि 20/09/2015	बुध 13/02/2034	केतु 12/02/2049	शुक्र 16/01/2059	सूर्य 04/01/2076
बुध 30/05/2018	केतु 10/02/2035	शुक्र 14/04/2050	सूर्य 17/01/2060	चंद्र 05/07/2076
केतु 09/07/2019	शुक्र 11/12/2037	सूर्य 20/08/2050	चंद्र 16/09/2061	मंगल 10/11/2076
शुक्र 08/09/2022	सूर्य 17/10/2038	चंद्र 21/03/2051	मंगल 17/11/2062	राहु 05/10/2077
सूर्य 21/08/2023	चंद्र 18/03/2040	मंगल 17/08/2051	राहु 16/11/2065	गुरु 24/07/2078
चंद्र 21/03/2025	मंगल 15/03/2041	राहु 04/09/2052	गुरु 17/07/2068	शनि 06/07/2079
मंगल 30/04/2026	राहु 02/10/2043	गुरु 11/08/2053	शनि 17/09/2071	बुध 11/05/2080
राहु 06/03/2029	गुरु 07/01/2046	शनि 20/09/2054	बुध 18/07/2074	केतु 16/09/2080
गुरु 17/09/2031	शनि 16/09/2048	बुध 17/09/2055	केतु 17/09/2075	शुक्र 16/09/2081

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
16/09/2081	17/09/2091	17/09/2098	17/09/2116	17/09/2132
17/09/2091	17/09/2098	17/09/2116	17/09/2132	00/00/0000
चंद्र 18/07/2082	मंगल 13/02/2092	राहु 31/05/2101	गुरु 05/11/2118	शनि 17/10/2134
मंगल 16/02/2083	राहु 03/03/2093	गुरु 24/10/2103	शनि 19/05/2121	00/00/0000
राहु 17/08/2084	गुरु 06/02/2094	शनि 30/08/2106	बुध 25/08/2123	00/00/0000
गुरु 17/12/2085	शनि 18/03/2095	बुध 19/03/2109	केतु 30/07/2124	00/00/0000
शनि 18/07/2087	बुध 15/03/2096	केतु 06/04/2110	शुक्र 31/03/2127	00/00/0000
बुध 16/12/2088	केतु 11/08/2096	शुक्र 06/04/2113	सूर्य 18/01/2128	00/00/0000
केतु 18/07/2089	शुक्र 11/10/2097	सूर्य 01/03/2114	चंद्र 19/05/2129	00/00/0000
शुक्र 18/03/2091	सूर्य 16/02/2098	चंद्र 31/08/2115	मंगल 25/04/2130	00/00/0000
सूर्य 17/09/2091	चंद्र 17/09/2098	मंगल 17/09/2116	राहु 17/09/2132	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 16 वर्ष 11 मा 5 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल	शनि - राहु	शनि - गुरु	बुध - बुध	बुध - केतु
21/03/2025	30/04/2026	06/03/2029	17/09/2031	13/02/2034
30/04/2026	06/03/2029	17/09/2031	13/02/2034	10/02/2035
मंगल 13/04/2025	राहु 03/10/2026	गुरु 07/07/2029	बुध 20/01/2032	केतु 06/03/2034
राहु 13/06/2025	गुरु 19/02/2027	शनि 01/12/2029	केतु 11/03/2032	शुक्र 05/05/2034
गुरु 06/08/2025	शनि 02/08/2027	बुध 11/04/2030	शुक्र 04/08/2032	सूर्य 23/05/2034
शनि 09/10/2025	बुध 28/12/2027	केतु 04/06/2030	सूर्य 17/09/2032	चंद्र 22/06/2034
बुध 06/12/2025	केतु 27/02/2028	शुक्र 05/11/2030	चंद्र 30/11/2032	मंगल 13/07/2034
केतु 29/12/2025	शुक्र 18/08/2028	सूर्य 21/12/2030	मंगल 20/01/2033	राहु 06/09/2034
शुक्र 07/03/2026	सूर्य 09/10/2028	चंद्र 08/03/2031	राहु 01/06/2033	गुरु 24/10/2034
सूर्य 27/03/2026	चंद्र 04/01/2029	मंगल 01/05/2031	गुरु 26/09/2033	शनि 20/12/2034
चंद्र 30/04/2026	मंगल 06/03/2029	राहु 17/09/2031	शनि 13/02/2034	बुध 10/02/2035
बुध - शुक्र	बुध - सूर्य	बुध - चंद्र	बुध - मंगल	बुध - राहु
10/02/2035	11/12/2037	17/10/2038	18/03/2040	15/03/2041
11/12/2037	17/10/2038	18/03/2040	15/03/2041	02/10/2043
शुक्र 01/08/2035	सूर्य 26/12/2037	चंद्र 29/11/2038	मंगल 08/04/2040	राहु 01/08/2041
सूर्य 22/09/2035	चंद्र 21/01/2038	मंगल 29/12/2038	राहु 01/06/2040	गुरु 04/12/2041
चंद्र 17/12/2035	मंगल 08/02/2038	राहु 17/03/2039	गुरु 19/07/2040	शनि 30/04/2042
मंगल 16/02/2036	राहु 27/03/2038	गुरु 25/05/2039	शनि 15/09/2040	बुध 09/09/2042
राहु 20/07/2036	गुरु 07/05/2038	शनि 15/08/2039	बुध 05/11/2040	केतु 02/11/2042
गुरु 05/12/2036	शनि 25/06/2038	बुध 27/10/2039	केतु 26/11/2040	शुक्र 07/04/2043
शनि 18/05/2037	बुध 08/08/2038	केतु 26/11/2039	शुक्र 25/01/2041	सूर्य 23/05/2043
बुध 11/10/2037	केतु 26/08/2038	शुक्र 21/02/2040	सूर्य 13/02/2041	चंद्र 09/08/2043
केतु 11/12/2037	शुक्र 17/10/2038	सूर्य 18/03/2040	चंद्र 15/03/2041	मंगल 02/10/2043
बुध - गुरु	बुध - शनि	केतु - केतु	केतु - शुक्र	केतु - सूर्य
02/10/2043	07/01/2046	16/09/2048	12/02/2049	14/04/2050
07/01/2046	16/09/2048	12/02/2049	14/04/2050	20/08/2050
गुरु 21/01/2044	शनि 12/06/2046	केतु 25/09/2048	शुक्र 24/04/2049	सूर्य 21/04/2050
शनि 31/05/2044	बुध 29/10/2046	शुक्र 20/10/2048	सूर्य 16/05/2049	चंद्र 01/05/2050
बुध 25/09/2044	केतु 25/12/2046	सूर्य 27/10/2048	चंद्र 20/06/2049	मंगल 09/05/2050
केतु 12/11/2044	शुक्र 07/06/2047	चंद्र 09/11/2048	मंगल 15/07/2049	राहु 28/05/2050
शुक्र 30/03/2045	सूर्य 26/07/2047	मंगल 17/11/2048	राहु 17/09/2049	गुरु 14/06/2050
सूर्य 11/05/2045	चंद्र 16/10/2047	राहु 10/12/2048	गुरु 13/11/2049	शनि 04/07/2050
चंद्र 19/07/2045	मंगल 13/12/2047	गुरु 30/12/2048	शनि 19/01/2050	बुध 23/07/2050
मंगल 05/09/2045	राहु 08/05/2048	शनि 22/01/2049	बुध 21/03/2050	केतु 30/07/2050
राहु 07/01/2046	गुरु 16/09/2048	बुध 12/02/2049	केतु 14/04/2050	शुक्र 20/08/2050

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

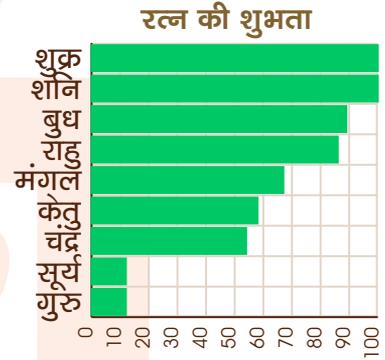
मूलांक	7
भाग्यांक	6
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	100%	भाग्योदय, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	100%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, धन
पन्ना	बुध	89%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	86%	भाग्योदय
मूंगा	मंगल	67%	धनार्जन, सुख
लहसुनिया	केतु	58%	पराक्रम, दम्पति
मोती	चंद्र	54%	दम्पति
माणिक्य	सूर्य	12%	नेष्ट भाग्य, दुर्घटना
पुखराज	गुरु	12%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	17/09/2031	0%	34%	54%	95%	12%	100%	100%	93%	41%
बुध	16/09/2048	25%	34%	67%	100%	12%	100%	100%	86%	58%
केतु	17/09/2055	0%	34%	73%	89%	12%	100%	91%	74%	71%
शुक्र	17/09/2075	0%	34%	67%	95%	12%	100%	100%	93%	64%
सूर्य	16/09/2081	38%	61%	73%	89%	25%	89%	91%	74%	41%
चंद्र	17/09/2091	25%	67%	67%	95%	12%	100%	100%	74%	41%
मंगल	17/09/2098	25%	61%	79%	76%	25%	100%	100%	74%	64%
राहु	17/09/2116	0%	34%	54%	89%	12%	100%	100%	99%	41%
गुरु	17/09/2132	25%	61%	73%	76%	38%	89%	100%	86%	58%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/10/2014-02/11/2014	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धन
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

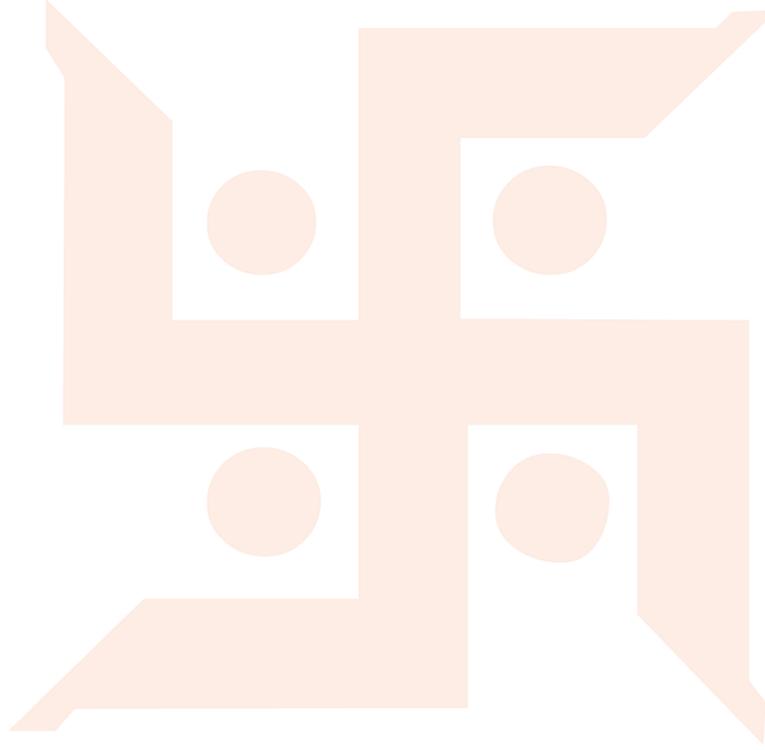
**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है। यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जिससे धनऐश्वर्य से आप सर्वदा युक्त रहेंगी। जीवन में जमीन जायदाद से भी आपको प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से नित्य लाभ होता रहेगा तथा इसके कय विकय से भी आप प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला होंगी। सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही किसी विशिष्ट सम्मान भी आपको प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप अपना जीवन यापन करेंगी।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी। यदाकदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद या तनाव भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्प ही रहेगा। वाणी से भी आप यदा कदा कठोरता का प्रदर्शन करेंगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में भी न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से आप युक्त रहेगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग भी सामान्य ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी समय समय पर लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकद्दमें या चुनाव आदि में भी आपको सफलता प्राप्त होती रहेगी। लेकिन शरीर में यदा कदा गर्मी या पित आदि से कोई परेशानी हो सकती है। परन्तु इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही मामा आदि से भी सुख सहयोग की न्यूनता रहेगी परन्तु आपका सामान्य जीवन सुखी रहेगा।

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों को आधुनिक सुख सुविधा प्रदान करने के लिए तत्पर रहेगी एवं इसमें आपको सफलता भी मिलेगी। साथ ही पारिवारिक जनों से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा सभी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य, बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला

पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा। धन धान्य का वे पूर्ण लाभार्जन करेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार से आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी वे पूर्ण सहयोग एवं प्रेरणा आपको प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा किसी सैद्धान्तिक मतभेद पर इसमें कटुता या तनाव भी परिलक्षित होगा परन्तु कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका सुख दुःख में पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं उन्हें सर्वदा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी।

चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक

दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अर्जित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान्, ज्योतिषी, राजयोगी, न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(16/10/2014 - 17/09/2031)

शनि की महादशा उन्नीस वर्ष की है। आपके जीवन में यह 16/10/2014 को आरम्भ और 17/09/2031 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि दशम भाव में स्थित है। यह स्वभाव से एक अशुभ ग्रह है, किन्तु अत्यन्त शक्तिशाली है और शुभ-अशुभ दोनों का कार्य करता है। इसे बाधक ग्रह कहा जाता है जो जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। फल की प्राप्ति में यह विलम्ब करता है, पर उससे वंचित नहीं करता। यह जातक को लक्ष्य की पूर्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में दशम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि 12 वें, 4 थे तथा 7 वें भाव पर है और यह इन भावों के कार्य को प्रभावित कर रहा है। दशम भाव, जिसमें यह स्थित है, प्रतिष्ठा, सामाजिक सम्मान, सफलता, आदर, ख्याति, उत्तरदायित्व, सांसारिक गतिविधि, पदोन्नति, प्रगति, उच्च पद, सरकार से सम्मान का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

इस महादशा के दौरान आपको स्वास्थ्य सम्बन्धी कोई गम्भीर समस्या नहीं होगी, न ही कोई गम्भीर बीमारी या दुर्घटना होगी और आप सामान्यतया कार्यों को पूरा करने की स्थिति में होंगे। किन्तु, आपको कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने के प्रति सतर्क तथा सावधान रहने की सलाह दी जाती है क्योंकि नीच का शनि मस्तिष्क को प्रभावित करता है।

धन सम्पत्ति :

दशम अर्थात् व्यवसाय व जीविका के भाव में स्थित शनि की 12वें भाव पर दृष्टि है। इसलिए आपको चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि के प्रति सतर्क रहना चाहिए क्योंकि कुछ हानि की सम्भावना है।

व्यवसाय :

शनि दशम भाव में स्थित है और उसे शक्ति प्रदान कर रहा है। आपको आधिकारिक पद की प्राप्ति की सम्भावना है। इस दशा के दौरान आप शासक हो सकते हैं-अथवा आपको मन्त्री पद की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने प्रभुत्व तथा सेवा का प्रदर्शन करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

दशम भाव से शनि की 12वें, 4थे तथा 7वें भावों अर्थात् शयन स्थान, 'शुभस्थान' और जीवनसाथी के भावों पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको एक सुन्दर तथा सहायक जीवन साथी की प्राप्ति होगी, किन्तु, जीवन में विवाद हमेशा होते रहेंगे जिससे आपको मानसिक अशांति तथा निराशा बनी रहेगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

नकारात्मक विचार के कारण आप अपने मस्तिष्क को सीमित रखेंगे और तपस्वी

रहेंगे ।



**अंतर्दशा :- शनि - मंगल
(21/03/2025 - 30/04/2026)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 16/10/2014 को प्रारंभ होकर 17/09/2031 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 21/03/2025 को प्रारंभ होकर 30/04/2026 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। मंगल अग्निप्रधान ग्रह है और ऊर्जा, भूसंपत्ति का कारक है। एकादश भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 2, 5, 6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके कार्य में बाधाएं आएंगी। फिर भी आप धनी बनेंगे, अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। साहसी होंगे, समाज में प्रभाव रहेगा। उच्चवर्ग से संपर्क के कारण अभिमानी बन सकते हैं। धन की पिपासा की तृप्ति नहीं होगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन ब्रह्माजी के गायत्री मंत्र के 108 जाप करें और हनुमान मंदिर में जाकर उपासना करें।

**अंतर्दशा :- शनि - राहु
(30/04/2026 - 06/03/2029)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 16/10/2014 को प्रारंभ होकर 17/09/2031 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 30/04/2026 को प्रारंभ होकर 06/03/2029 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। नवम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप खूब धनी बनेंगे और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। इसके बावजूद अशिष्ट और पिता के लिए अकृतज्ञ हो सकते हैं। धर्म में आस्था भी घट सकती है। प्रत्येक कार्य में सावधानी आवश्यक है। कर्तव्यपालन लाभकारी होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन राहु गायत्री मंत्र के 108 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - गुरु
(06/03/2029 - 17/09/2031)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है आपके लिए यह 16/10/2014 को प्रारंभ होकर 17/09/2031को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 2 वर्ष 6 मास 12 दिन की होगी जो आपके लिए 06/03/2029 को प्रारंभ होकर 17/09/2031 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 11, 1, 3 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको व्यापार, व्यापार में साझेदार और जीवनसाथी के माध्यम से लाभ होगा। आप नीतिवान और दयालु होंगे। धर्म में रुचि होगी, गुणवान होंगे। दूसरों की भावनाओं की कद्र करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।